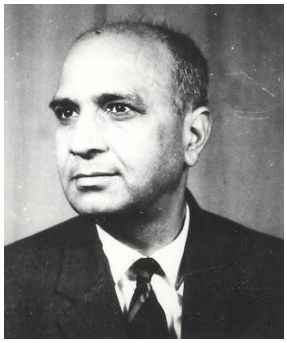

डा. पुष्करनाथ

निदेशक (सितम्बर, 1951 से सितम्बर, 1952 तथा मई, 1956 से फरवरी, 1969 तक)

(उपोष्ण क्षेत्रों में आलू की स्वदेशी प्रजातियों को विकसित किया तथा उसकी उत्पादन प्रौद्योगिकी तथा बीज उत्पादन तकनीक को प्रोन्नत किया।)

जन्म एवं शिक्षा

डा. पुष्करनाथ का जन्म 20 मार्च, 1910 को श्रीनगर (जम्मू एंड कश्मीर) में हुआ था। आपने सन् 1931 में बी.एस.सी (आनर्स) तथा सन् 1932 में पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर से एम.एस.सी (वनस्पति विज्ञान) की डिग्री प्राप्त की। वह भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में (कृषि वनस्पति विज्ञान) के सहभागी (ऐसोसियेट) बनाये गये तथा सन् 1941 में पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की डिग्री हासिल की। उन्होनें विषाणु रोग विज्ञान एवं आलू के प्रजनन पर उन्नत प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

व्यवसायिक उपलब्धियां

डा. पुष्करनाथ, आलू एवं गेहूं प्रजनन केन्द्र (भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान) शिमला में सन् 1935 में कार्यालय प्रभारी के रूप में नियुक्त किये गये। सन् 1949 में, केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, पटना की स्थापना हो जाने के बाद वह सन् 1950 में आलू प्रजनन उप-केन्द्र, शिमला में एक वनस्पति वैज्ञानिक के रूप में नियुक्त किये गये। सन् 1955 में आपने कृषि निदेशक (हिमाचल प्रदेश) में कार्यभार ग्रहण किया तथा मई, 1956 तक निरन्तर कार्यरत रहे तथा केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला वापिस आकर सन् 1956 तक डा. एस. रामानुजम् के निदेशक पद से पदभार त्याग करने के बाद आपने यहां पर निदेशक पद का पदभार सन् 1969 में अपनी सेवानिवृत्ति तक संभाले रखा। आप सेवानिवृत्ति के बाद राष्ट्रीय बीज निगम, नई दिल्ली के सलाहकार तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, हिमाचल प्रदेश के अध्यक्ष नियुक्त किये गये।

सम्मान

डा. पुष्करनाथ सन् 1974 में भारतीय आलू संघ के मानिद फैलो के रूप में चुने गये। आप भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अखिल भारतीय बोर्ड सहित कई सरकारी एवं अन्य कार्यालयी समितियों के अध्यक्ष थे। आप भारतीय आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन संस्था (इंडियन सोसायटी ऑफ जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग) के अध्यक्ष भी रहे। आपको आलू में उनके योगदान के लिए सन् 1968 में रफी अहमद किदवई अवार्ड से सम्मानित किया गया।